IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 28, Issue 9, Series 1 (September, 2023) 77-83
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

राजस्थान में पर्यटन की अवधारणा व विकास का भौगोलिक अध्ययन

चिरन्जी लाल रैगर
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजगढ़ जिला अलवर राजस्थान

शोध सारांश
आज पर्यटन विश्व का एक विकसित उद्योग है। वर्तमान समय में समाज को पर्यटन से अनेक प्रकार के सामाजिक एवं आर्थिक लाभ मिलते रहे हैं। इसलिए वर्तमान समय में प्रत्येक देश की शासन प्रणाली अपने विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है और नवीनतम उपलब्धियों के लिए लगातार नए आयाम खोजे जा रहे हैं। हालांकि कहा जाता है कि भारत में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन पिछली तीन शताब्दियों से ही बड़े पैमाने पर चल रहा है। यहां आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि पर्यटकों की संख्या 8.4 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रही है। आगामी पंचवर्षीय योजना में विश्व पर्यटन की दृष्टि से नवीनतम सुविधाओं एवं आकर्षणों के कारण भारतीय पर्यटन में आठ प्रतिशत की वृद्धि होने की आशा है।
ऐसा नहीं है कि यह भारत देश के लिए एक आधुनिक विधा होनी चाहिए। यह एक विकासवादी प्रक्रिया है जो मनुष्य के उद्भव के साथ निरंतर और निरंतर चलती रही है। इसे हम मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति मान सकते हैं। बच्चा जैसे ही आंख खोलता है, बाहर देखने का मन करता है। बूढ़ा होने पर वह खुद बाहर दौड़ता है और परिवार के साथ घूमता रहता है। एक किशोर के रूप में, स्कूल पहुंचने के बाद, वह अपनी आँखें बंद करके टहलने के लिए भाग जाता है। युवावस्था में यह प्रवृत्ति बढ़ती रहती है और अक्सर बाहर जाने के प्रस्ताव बनाए जाते हैं। एक वयस्क के रूप में, दैनिक कार्य से छुट्टी लेकर, आनंद और थकावट को दूर करने के लिए पर्यटन पर चला जाता है, अर्थात यह धीरे–धीरे विकसित हो रहा है। यह विकास हमेशा मानव सभ्यता और प्रवृत्ति के अनुरूप होता है। इसका कारण यह है कि इससे ज्ञान में वृद्धि होती है। मनुष्य सीखने की नई दिशाओं को प्रकट करके रीति–रिवाजों और समकालिक प्रवृत्तियों से जुड़ जाता है। संबंधों की एक विस्तृत श्रृंखला है। देशों और सभ्यताओं के बीच की दूरी धीरे–धीरे कम होती जा रही है। आर्थिक क्षेत्र का विकास जारी है। देश का व्यक्तित्व बाहरी दुनिया में चमकता है। सहयोग और संबंधों के प्रति रुझान बढ़ता है। इसलिए इस लाभकारी प्रक्रिया के क्रमिक इतिहास को जानना आवश्यक है।

मुख्य बिन्दु :– पर्यटन का अर्थ, पर्यटन का महत्व, राष्ट्रीय आय व पर्यटन, पर्यटन का क्षेत्र, राजस्थान में पर्यटन की अवधारणा, पर्यटन विकास व निष्कर्ष ।

पर्यटन परिचय :–

पर्यटन शब्द को अंग्रेजी में पर्यटन कहते हैं। यह शब्द इंग्लिश टूर से लिया गया है। यह लैटिन टॉर्मोस से लिया गया है जिसका अर्थ है – एक वृत्त का वर्णन करने का एक साधन। इस शब्द से सर्कुलर टूर का शब्द आता है। इसका उपयोग पहली बार वर्ष 1643 में किया गया था। इसका अर्थ था विभिन्न स्थानों की यात्रा, चक्रवाती यात्राएँ, किसी स्थान के महत्वपूर्ण स्थानों की क्रमिक या अनियमित यात्रा आदि।

पर्यटन दो शब्दों से मिलकर बना है। पेरी–अटन पर्यटन का अर्थ है घूमना–फिरना, मौज–मस्ती करना, भ्रमण पर जाना, तीर्थयात्रा, ग्रामीण इलाकों, हवा बदलना आदि।

पर्यटक – यात्रा करने वाले व्यक्ति को पर्यटक कहते हैं। यूनिवर्सल डिक्शनरी के अनुसार, इसका पहला प्रयोग वर्ष 1776 में हुआ था। यह यात्रा करने वाले व्यक्ति को संदर्भित करता है। इस सार्वभौम शब्दकोश के अनुसार पर्यटक वह व्यक्ति होता है जो अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए, आनंद के लिए या अन्य लोगों को यह बताने के लिए यात्रा करता है कि उसने यात्रा की है। पर्यटक शब्द का प्रयोग आज के समय में सुखद यात्रा के लिए किया जाता है। अपने पहले के दौर में पर्यटन को एक ऐसा कार्य समझा जाता था जिसमें मोटर यात्रा, भ्रमण या सामान्य यात्रा पर विचार किया जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी में, पर्यटक का उपयोग उस व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए किया जाता था जो एक बार आया था या कई बार आया था, विशेष रूप से वह जिसने इसे मनोरंजन के लिए किया था।

पर्यटक श्रेणी का अर्थ है ऐसे आगंतुक, जो समाज में सामान्य स्थिति के लोग हैं। इसलिए, विभिन्न पर्यटन केंद्रों में बने पर्यटक आवासों में सामान्य सुविधाएं हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में होटलों को अतिथि कहा जाता है और आवास को आश्रय कहा जाता है।

पर्यटन शब्द अपने इच्छित उद्देश्य और विषय क्षेत्र से बहुत आगे तक फैल गया है। आज पर्यटन शब्द में हर संभव अवसर पर हास्य समाहित है। किसी ने सही कहा है कि आज का पर्यटक कुछ अलग देखने और महसूस करने के लिए अपने देश से दूर चला जाता है।

विश्व पर्यटन संगठन (डब्ल्यूटीओ) एक पर्यटक को "एक पर्यटक एक अल्पकालिक आगंतुक के रूप में परिभाषित करता है, जिसका उस स्थान पर कम से कम बीस घंटे का प्रवास होता है और उसकी यात्रा का उद्देश्य अपने ख़ाली समय के दौरान होता है – आनंद, अवकाश, स्वास्थ्य यह अध्ययन, धार्मिक गतिविधियों और खेलकूद या सम्मेलनों आदि में भागीदारी में से कोई भी हो सकता है।

जैसा कि वर्तमान समय में भ्रमण या पर्यटन की प्रवृत्ति मानव स्वभाव में अतीत से ही थी, जिसमें धन के विकास और परिवहन की सुविधाओं के साथ सभ्यता की प्रगति धीरे–धीरे बढ़ती गई। बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति, जनसंख्या की जिज्ञासा, आवश्यकता के अनुसार खाद्यान्न उत्पादन में कमी, जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न असंतुलन, प्राकृतिक आपदाओं की समस्या, खोजी प्रवृत्ति, सेवा और शिक्षा के अवसरों का विस्तार, ज्ञान की लालसा, साम्राज्यवादी भावना, प्रचार आदि। कई कारणों से प्रेरित होकर, दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के निवासी अपने घरों से बाहर निकल गए और दूर–दराज के स्थानों की यात्रा करने लगे। यह अनादि काल से देश–विदेश में होता चला आ रहा है। मनु ने कहा है कि इस देश के नेता हमेशा से धरती के सभी लोगों को अपने चरित्र की शिक्षा देते रहे हैं।

पिछले तीन दशकों में स्वचालित वाहनों की संख्या में जबरदस्त प्रगति हुई है। सड़कों पर दौड़ते, पानी में तैरते और हवा में उड़ने वाले वाहनों में जो तेजी से विकास और विकास हुआ है, वह कल्पना से परे है। इनके साथ परिवहन के विभिन्न साधनों के बीच सहसम्बन्ध बढ़ा है। हालांकि सड़कें और रेलवे अक्सर एक साथ चलते हैं, लेकिन पहाड़ी इलाकों में पहुंचकर ट्रेनों का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। वहां से केवल सड़क यात्रा शुरू की जा सकती है, जैसे हरिद्वार स्टेशन के बाद उत्तरांचल की पहाड़ियां सड़क परिवहन से जुड़ी हुई हैं और पूर्व में अशाम के बाद अरुणाचल राज्य को ही सड़क परिवहन का आधार बना रहा है। वहां न तो पहाड़ों में कोई लाइन बिछाई जा सकती है और न ही कोई ट्रेन चल सकती है। इसी तरह जहां सड़क समुद्र तट पर रुकती है, वहां जहाज की यात्रा शुरू होती है या हवाई जहाज से दूसरे देशों की यात्रा शुरू होती है। उदाहरण के लिए, हाल ही में भारत में दिल्ली से इन जहाजों द्वारा इंग्लैंड के लिए पर्यटकों के लिए बस सेवा शुरू की गई है। यही कारण है कि आज की सरकार और बुद्धिजीवी पर्यटन के विकास में लगे हुए हैं। इसे अब यात्रा उद्योग कहा जा रहा है और यह सामाजिक विज्ञान का एक एकीकृत रूप ले रहा है।

पर्यटन के महत्व

पर्यटन प्रत्यक्ष अर्थशास्त्र की ही एक शाखा है इसके क्रोड में अन्तर्निहित पाँच संकल्पनाओं यथा–संस्कृति, सांस्कृतिक, सांस्कृतिक पारिस्थातिकी का अध्ययन किया जाता है।

मानव अपनी विशिष्ट तकनीकि उपलब्धियों, सामाजिक संगठन, मान्यताओं और मूल्यों, जीवन दर्शन और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वातावरण के विभिन्न तत्वों से अनुकूलन अथवा उनका शोषण या परिष्करण करता रहता है, जिससे मनुष्य की विशिष्ट पर्यटन जीवन पद्वति प्रचलित होती है।

पर्यटन एवं राष्ट्रीय आय

जब पर्यटक वस्तुओं और सेवाओं के क्रम के लिए पर्यटन किए गये देशों में भुगतान करते हैं, तो वह सम्पूर्ण राशि पर्यटन प्राप्तियों के रूप में परावर्तित होता है। एक देश की अर्थव्यवस्था को पर्यटकों द्वारा किये गये योगदान की मात्रा इन्हीं प्राप्तियों पर निर्भर है। कुल राष्ट्रीय उत्पादन के सन्दर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों द्वारा प्राप्तियों के प्रतिशत की गणना का सरल उपाय है। यह उपाय उन देशों के लिए विशेष महत्व का है, जिन देशों में घरेलू पर्यटक का विकास नहीं हुआ है और उनका कोई बड़ा आधार नहीं है परन्तु उन देशों में अन्तर्राष्ट्रीय प्राप्तियाँ एक देश के पर्यटन उद्योग के अर्थिक महत्व अथवा लाभ का पूर्ण संकेत प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार बहुत से देशों में पर्यटन राष्ट्रीय आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है तथा उन देशों के अर्थिक विकास में इसका महत्व पूर्ण योगदान रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय तथा श्रेत्रिय

पर्यटन से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। अर्थात क्रम–विक्रय विदेशी विनिमय के अर्न्तगत होता है। विकासशील राष्ट्र जो स्थानीय आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन करने में असमर्थ है तथा जिनके पास अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के विकास का कोई औद्योगिक अथवा तकनीकी आधार नहीं है, आयात करते हैं और उनका भुगतान विदेशी विनिमय में होता है। एक देश वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात करके विदेशी विनिमय अर्जित करता है। इन निर्यातों की प्राथमिकता औद्योगिक वस्तुएँ हैं, जिन्हें दृश्य निर्यात कहते हैं तथा जहाज, जल परिवहन, बैकिंग बीमा, पर्यटन इत्यादि जिन्हें आदृश्य निर्यात कहते है ये मत किसी भी देश की विदेशी व्यापार लेखा में उल्लिखित होते हैं। इस प्रकार पर्यटन से बहुत से देशों के लिए विदेशी मुद्रा का एक महत्वपूर्ण अंशदाता है।

जनसमुदाय कभी स्वयं के देश में पर्यटन करता है, कभी अन्य देश में, कभी अकेले, कभी परिवार के साथ अथवा कभी समूह में इस दृष्टिकोण से पर्यटक के सम्बंध में अध्ययन करने पर हमें विभिन्न प्रकार के पर्यटकों का ज्ञान प्राप्त होता है। अतः पर्यटन को निम्न प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है –

1. घरेलू अथवा विदेशी पर्यटन –

स्वाभाविक रूप से, पर्यटन के लिए विदेश जाने वाले यात्रियों की संख्या बाहर यात्रा करने की तुलना में अपने पड़ोस और देश में यात्रा करने वाले लोगों की संख्या में बहुत अधिक है। इसका कारण यह है कि आपके देश में यात्रा करना कई मायनों में आसान है। भाषा, मुद्रा, रहन–सहन के अंतर, परंपराएं और पासपोर्ट की मुश्किलें आड़े नहीं आतीं। वह खुद सब कुछ समझता या व्यवस्थित करता है। समस्या है तो समाधान भी निकाला जाता है। जब ऐसा पर्यटक अपने ही देश में विभिन्न स्थानों पर पर्यटन के लिए जाता है, तो इसे घरेलू, स्वदेशी या आंतरिक पर्यटन कहा जाता है। साथ ही यदि अन्य देशों में पर्यटन किया जाता है तो उसे विदेशी पर्यटन कहते हैं, जिसमें पर्यटक आनंद के साथ–साथ ज्ञान का भी भोग करता है।

2. व्यक्तिगत या सामुदायिक पर्यटन –

कभी–कभी पर्यटक एकल पर्यटन पर जाते हैं और कभी–कभी समुदायों में इन्हें क्रमशः स्वतंत्र और संगठित पर्यटन भी कहा जाता है। स्वतंत्र पर्यटन में पर्यटक अपनी रुचि के अनुसार सभी तैयारी, आवास, भोजन और स्थान निर्णय लेता है, लेकिन इन सभी व्यवस्थाओं को व्यवस्थित करने में शामिल भावना पर निर्भर करता है। अक्सर ऐसे दौरों का आयोजन संस्थाओं या एजेंसियों द्वारा किया जाता है।

3. समूह भ्रमण –

विकसित देशों में पैसा काफी है और छुट्टियां भी ज्यादा हैं। उन्हें खुशी–खुशी बिताना वहां के लोगों की जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है। इसलिए वहां बड़ी संख्या में लोग छुट्टियों के दौरान पर्यटन के लिए बाहर जाते हैं। इसे ही मास टूरिज्म कहते हैं। यह विशेष रूप से अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, जापान, कनाडा आदि देशों में चलन है। आज भारतीयों के पास इसे बड़े पैमाने पर पर्यटन पर खर्च करने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं है। साथ ही सामूहिक परिवार व्यवस्था परंपराओं से आवश्यक व्यय की अधिकता इस दिशा में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए न तो उनके लिए वर्तमान में संभव है, न निकट भविष्य में संभावनाएं हैं।

4. सामाजिक पर्यटन –

कुछ देशों में सीमित संसाधनों वाले लोगों को पर्यटन के लिए राज्य द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इसमें राज्य खुद तय करता है कि पर्यटकों का समूह कहां, कब और कब तक जाएगा। यह प्रणाली पूर्वी यूरोपीय देशों में अधिक प्रचलित है। हाल ही में भारत में भी ऐसी योजना बनाई गई है कि हर साल किसानों के एक समूह को विदेश यात्रा पर राज्य के खर्च पर सीखने और दूसरे देशों से संपर्क करने के लिए भेजा जाए। ऐसी टीमें विदेश गई हैं और रूस आदि जैसे बाहरी देशों के पर्यटक भी भारत आए हैं। उनका मुख्य उद्देश्य सामाजिक संपर्क है।

पर्यटन क्षेत्र :–

आज पर्यटन उद्योग केवल एक उद्योग नहीं रह गया है, बल्कि इसकी छत्रछाया में अनेक उद्योग फल–फूल रहे हैं, जो इसके क्षेत्र के रूप में गिने जाते हैं। पहले इनकी 1461 अलग–अलग इकाइयाँ थीं, लेकिन अब वे धीरे–धीरे पर्यटन विभाग से जुड़ रही हैं। अतः इसका क्षेत्रफल इस प्रकार है–

राजस्थान में पर्यटनः अवधारणा एवं स्थिति :–

आन, बान और शान की भूमि राजस्थान आरंभ से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। उस समय, जब पर्यटन शब्द का असिततव सामने नहीं आया था, तब से ही राजस्थान के प्रति लोगों में आकर्षण रहा है। संभवतः राजस्थान ही एकमात्र ऐसा प्रदेश है जहां स्वतन्त्रता से पूर्व ही पर्यटन का व्यवस्थित रूप उभर कर सामने आया। राजा महाराजाओं ने अपने किलो, गढ़ो ओर महलो को विदेशी पर्यटको के लिए खोलने की शुरूआत आजादी से पूर्व ही कर दी। उनकी इस सोच के पीछे कारण था अपनी रियासत में आर्थिक ससाधनो का प्रयोग करना। इस लिहाज से पर्यटन की शुरूआत स्वतन्त्रता से पूर्व ही राजस्थान में हो गयी।

वैसे भी अपने समृद्ध पर्यटन स्थलो के कारण राजस्थान का पूरे भारत में विशिष्ट स्थान रहा है। इस बात को उन सभी ने माना भी है जो एक बार राजस्थान आये या फिर राजस्थान के बारे में सुना हो राजस्थान में पर्यटन के लिए बार बार आता है । यह राजस्थान की धरा का आकर्षण ही है कि सुप्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टॉड ने राजस्थान के अतीत व इसके गौरवशाली वैभव के बारे में लिखा है। यहीं नहीं, कर्नल टोंड राजस्थान आए थे यहां के इतिहास की खोज करने परन्तु फिर यहां के आकर्षण में इस प्रकार बंधे कि यहीं के होकर रह गए। उन्होंने राजस्थान के इतिहास, यहां की कला–संस्कृति, सुन्दर व मनोरम पर्यटन स्थलो के में घूम–घूम कर अनुसंधान करके लिखा है।

राजस्थान को सदियों से अपनी गौरव गाथा, कला एवं संस्कृति, तीर्थ स्थल, प्राकृतिक सौंदर्य, पशु–पक्षी अभयारण्य एवं ऐतिहासिक स्थलों के कारण देश–विदेश में सराहा जाता रहा है। यही कारण है कि राजस्थान आए बिना पर्यटकों की भारत यात्रा अधूरी ही रहती है। पर्यटन द्वारा जहाँ पारस्परिक सौहार्द तथा राष्ट्रीय एकता का विकास होता है, वही बहुमूल्य विदेशी मुद्रा का अर्जन तथा रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होती हैं। यह देश का दूसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला उद्योग बन चुका है। देश के आर्थिक विकास में पर्यटन के महत्व को देखते सरकार ने पर्यटन को उद्योग बनाने की दिशा में कारगर कदम उठाए हैं। हुए राज्य राजस्थान में पर्यटन को व्यावसायिक रूप देने हेतु सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा निरन्तर संरचनात्मक प्रयास किए जा रहे हैं।

राजस्थान राज्य के पर्यटन की जब भी चर्चा की जाती है, तब अलवर एवं अजमेर जिलों को भला कौन भूल सकता है? अलवर एवं अजमेर जिलों की संस्कृति अत्यंत प्राचीन और भौगोलिक संपदा लिए हुए हैं। जिसने प्राकृतिक भू–दृश्यों व आर्थिक दृश्यों को विकसित होने में सहयोग किया हैं। यहाँ पर अपार पुरातात्विक संपदा जिसमें महल, किले, हवेलिया, मंदिरों के वास्तुशिल्प एवं वीरता की गाथाएँ, कला एवं संगीत की परंपराएँ अत्यंत समृद्ध हैं। अलवर एवं अजमेर अरावली पहाड़ियों की गोद में बसे हुए हैं। जिसने इनके प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाने में चार चाँद लगा दिए हैं। अलवर एवं अजमेर जिलों में पर्यटन हेतु जहाँ एक ओर प्रमुख धार्मिक एवं लोक आस्था के स्थल अवस्थित हैं, वहीं दूसरी ओर ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर भी पर्यटकों को लुभाने के लिए प्रमुख स्थल हैं ।

राजस्थान के पर्यटन स्थलों की जब चर्चा की जाएं तो अलवर व अजमेर जिला भी पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । अजमेर शहर राजस्थान के खूबसूरत पर्यटक स्थलों में से एक हैं जो अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ हैं। अजमेर शहर सबसे अधिक संत मुइन–उद–दीन चिश्ती की दरगाह शरीफ के लिए प्रसिद्ध है। अपनी धार्मिक परंपराओं और संस्कृतिक महत्व को मजबूती से निभाता हुआ अजमेर शहर पर्यटकों को अपनी ओर बहुत अधिक आकर्षित करता हैं। अजमेर एक धार्मिक पर्यटक स्थल होने के साथ–साथ सदियों से चली आ रही लोकाचार और शिल्प कौशल कला में पारंगत हैं। भारत के राजस्थान राज्य के केंद्र में स्थित अजमेर ,अजमेर शरीफ की मजार के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं जहाँ दुनिया भर से मुस्लिम श्रद्धालु और पर्यटक आते है। अजमेर शहर को अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्धी मिलती है इसके अलाव हिंदु धर्म और मुस्लिम धर्म के अनुयाइयों के लिए एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। अजमेर में मनाए जाने वाले "उर्स त्यौहार" के दौरान संत मोइनुद्दीन चिश्ती की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य के अवसर पर दुनिया भर से पर्यटक आते हैं ।

अलवर राजस्थान का एक प्रमुख पर्यटन शहर है जो दिल्ली से राजस्थान की यात्रा करते समय सबसे पहले आता है। अलवर दिल्ली से 150 किलोमीटर और जयपुर शहर से 150 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। अलवर शहर भानगढ़ किले, झीलों, सरिस्का टाइगर रिजर्व और हेरिटेज हेरलिस जैसे पर्यटन स्थलों की वजह से काफी लोकप्रिय है। राज्य का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल होने के साथ ही यह कई बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग की वजह से भी बहुत प्रसिद्ध है। अगर आप अलवर में बाला किला , भानगढ़ किला, पांडु पोल और अन्य मंदिर प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं ।

राजस्थान सरकार ने पर्यटन को व्यवसाय का दर्जा प्रदान किया । इस कारण भी यहाँ पर्यटकों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध है । पर्यटन की सुविधा की दृष्टि से राजस्थान राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा पर्यटकों के आवास, खाने की व्यवस्था, होटल, ट्यूरिस्ट, बंगले, परिवहन के साधनों आदि का संचालन किया जा रहा है । जगह जगह पर्यटकों की सुविधा के लिए पर्यटक विश्रामगृह और टूरिस्ट काम्प्लेक्स आदि का निर्माण किया जा रहा है. देशी विदेशी पर्यटकों के लिए एक विशेष रेल पैलेस ऑन व्हील भी चलाई जाती है । यहाँ पर्यटन क्षेत्र में निजी पूंजी को बढ़ावा देने के लिए निगम में एकल सुविधा केंद्र की स्थापना की गई है । राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य हैरिटेज होटलों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है । पर्यटन की इन सुविधाओं के कारण ही यहाँ पर्यटकों की संख्या भी अधिक हो रही है । पर्यटन एक प्रकार से संगठित व्यवसाय बन चुका है, पर्यटकों के आने से विदेशी मुद्रा की जहाँ प्राप्ति होती है, वही देशी कलात्मक वस्तुओं के व्यवसाय में भी वृद्धि होती जा रही है । इसके साथ ही पर्यटन के माध्यम से विभिन्न देशवासियों के विचारों के आदान प्रदान के साथ ही सांस्कृतिक और व्यावसयिक संबंधो का भी विकास हुआ है । राजस्थान पर्यटन की दृष्टि से भारत में प्रमुख एवं अग्रणी स्थान रखता है । यहाँ पर्यटकों की सुख सुविधा और सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है । यही कारण है कि यहाँ विदेशी सैलानी सर्वत्र घूमते हुए दिखाई देते है ।

पर्यटन का विकास

"आज की दुनिया में हर दसवां व्यक्ति पर्यटक है।" अतः पर्यटन के विकास में एक ऐसा महत्वपूर्ण खोज है कि जो हमें पूर्वजों की धरोहर अपनी प्राकृतिक व सांस्कृतिक धरोहरों से अवगत कराता है। पर्यटन आर्थिक दृष्टिकोण से भारत विदेशी एवं राज्य मुद्रा अर्जित करता है साथ ही इससे राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा मिलती है। यह मानव संसाधन विकास का एक महत्वपूर्ण उपादान है। राष्ट्रीय पर्यटन नीति के रूप में देखा जा सकता है कि यह लोगों में आपसी सद्भाव बढ़ाने और उन्हें सामाजिक आर्थिक लाभ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। पर्यटन के अनुकूल इतना सब कुछ होते हुए भी देश के अनेक भागों में ढाँचागत सुविधाओं की कमी पर्यटकों को हतोत्साहित करती है। इन्हीं सब गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने पर्यटन भूगोल के विकास में महत्वपूर्ण सन्दर्भ प्रस्तुत किया है ।

राजस्थान में पर्यटन सर्किट प्रसिद्ध स्थान राजस्थान के दर्शनीय स्थल पधारों म्हारे देश, रंगीला राजस्थान, सुरंगों राजस्थान, अतिथि देवो भव और पधारो म्हारे देवरे के आकर्षक नारे देशी विदेशी पर्यटकों को राजस्थान आने का आमंत्रण देते हैं । राजस्थान का नाम सुनते ही किले, गढ़, महल और इनसें जुड़ी वीरता की कहानियां, खनकती तलवारें, घोड़ों की टापे, धधकती ज्वालाओं का जौहर आँखों के सामने साकार होने लगता हैं । यहाँ के वीरों और वीरांगनाओं की गाथाएं, पन्ना का त्याग और बलिदान, महाराणा प्रताप की आन बान, कुम्भा का कला प्रेम, पद्मिनी का सौन्दर्य, मीरा की भक्ति कीर्तिगाथाएं बरबस ही पर्यटकों को राजस्थान खींच लाती हैं । दूर तक पसरे रेत के धोरे, मन भाव झीलें, पग पग पर मंदिर और देवालय पर्यटकों को रोमांचित कर देते हैं । यहाँ की सांस्कृतिक वैभव अतुलनीय है. कहीं मेले उत्सव, तीज त्योहारों की उमंग है तो कही कलाकारों द्वारा चित्रित जीवन की विविध पहलू मन को सहज ही छू लेते हैं । कहीं लोक कलाओं की सतरंगी प्रकाश है तो कही धोरों पर गूंजती कलाकारों की स्वर लहरियां, वाद्य यंत्रों का सुरीला संगीत और नृत्य की मोहक अदाएं पर्यटक को पुनः राजस्थान की ओर खींच लाती हैं । भारत में आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आता हैं । विपरीत भौगोलिक परिस्थियों के बावजूद राजस्थान के पर्यटक स्थलों की संस्कृ ति मनों को जोड़ती है और परस्पर समन्वय का भाव जगाती हैं. यहाँ सर्वत्र प्राचीन काल से ही अतिथि को देवता का दर्जा देकर उसका सम्मान सेवा सत्कार किया जाता रहा हैं । राजस्थान की संस्कृति में ही पर्यटक के साथ अतिथि जैसा व्यवहार किया जाता हैं. अतः पर्यटन यहाँ की धरती में बसा हुआ हैं. राजस्थान में 1956 ई पर्यटन विभाग की स्थापना की गई और 1989 ई में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया. राजस्थान को पर्यटन की दृष्टि से दस सर्किटों में विभाजित किया गया हैं ।

1. जयपुर, आमेर

2. अलवर, सिलीसेढ़, सरिस्का परिपथ

3. भरतपुर डींग धौलपुर परिपथ

4. जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर नागौर परिपथ

5. चुरू झुंझुनू, सीकर परिपथ

6. माउंट आबू, सिरोही पाली, जालौर परिपथ

7. उदयपुर, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, कुम्भलगढ़, जयसमन्द, डूंगरपुर परिपथ

8. अजमेर, पुष्कर, मेड़ता, नागौर परिपथ

9. कोटा, बूंदी, झालावाड़ परिपथ

10 . रणथम्भौर, टोंक परिपथ

इन विभिन्न सर्किटों की अपनी अलग अलग विशेषताएं है । कोई प्रदेश पहाड़ी है तो कोई मरुस्थलीय, कहीं ऐतिहासिक ईमारते व किले हैं तो कहीं राष्ट्रीय पार्क और अभ्यारण्य हैं । राजस्थान में पर्यटन में इस दस सर्किटों में सभी प्रसिद्ध स्थल आते हैं ।

पर्यटन संगठन –

हर देश में पर्यटन संगठन को बढ़ावा दिया गया है। उनकी शाखाएँ विदेश में हैं और जहाँ शाखाएँ उपलब्ध नहीं हैं, उनका प्रतिनिधित्व विदेशी पर्यटन संगठनों में किया जाता है ताकि कोई अपने स्थान पर रहकर दूसरे देश के पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सके, असुविधाओं का समाधान कर सके, पर्यटकों की जिज्ञासा को दूर कर सके और पर्यटकों को आकर्षित कर सके। विदेश में पर्यटन विभाग की शाखाओं की स्थापना के पीछे जा सकते हैं, यह आवश्यक है कि व्यवस्था के लिए उनके देश का एक व्यक्ति वहां मौजूद हो। यह प्रचार के लिए सस्ता है और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए उपयोगी साधन है। विश्व में स्वदेशी पर्यटन संगठनों का एक संगठन बनाया गया है, जहां सभी सदस्य समय–समय पर उस मंच पर बैठकर समस्याओं का समाधान करते हैं, सहयोग के नए तरीके खोजे जाते हैं। इसलिए विश्व में स्थापित ऐसे संगठनों का अध्ययन भी इसकी सीमा में आता है।

पर्यटन विपणन

पर्यटन न तो कोई वस्तु है और न ही इसका कोई निश्चित बाजार है जहां खरीद–बिक्री होती है। फिर भी यह एक ऐसी क्रिया है जो एक वस्तु की तरह लाभान्वित होती है। इसके लिए एक पर्यटन क्षेत्र बनाना होगा जहां से उन्हें बड़ी मात्रा में अपने देश लाया जा सके। आपस में काफी प्रतिस्पर्धा भी है। हर देश अपने देश में ज्यादा से ज्यादा पर्यटकों को लाने की होड़ में रहता है। इस प्रकार यह एक बाजार क्रिया का रूप ले लेता है। इसलिए, हम पर्यटन विपणन को परिभाषित कर सकते हैं कि आज यह एक बाजार का रूप ले चुका है। इसका लक्ष्य अपने देश में नए पर्यटकों को आकर्षित करना और उन्हें अन्य प्रतिद्वंद्वी देशों की ओर आकर्षित होने से रोकना है, यही पर्यटन का विपणन है। इसलिए यह पर्यटन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

निष्कर्ष : –

राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा समय–समय पर पर्यटन संबंधी गतिविधियों के उन्नयन हेतु विभिन्न प्रकार के कदम उठाए जाते रहे हैं, तथापि अभी तक राजस्थान में विभिन्न प्रकार के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक मंदिरों, धरोहर एवं जलाशयों का समुचित विकास कर स्थानीय लोगों के आर्थिक उन्नयन हेतु रोजगार मुहैया करवाने की ओर ध्यान नहीं दिया गया हैं। यद्यपि राजस्थान में पर्यटन की काफी संभावनाएँ विद्यमान हैं, लेकिन पर्यटन विभाग अभी तक इन संभावनाओं को धरातल पर उतार नहीं पाया है। राजस्थान के सभी पर्यटन स्थलों की अपनी–अपनी स्थानीय, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक समस्याएँ तो साफ–साफ दृष्टिगोचर होती हैं, लेकिन इन समस्याओं के समाधान की ओर न तो अभी तक सरकार का ध्यान गया है और न हीं किसी गैर सरकारी संगठन का यदि सरकार द्वारा उक्त समस्याओं का समाधान स्थानीय लोगों, स्थानीय निकायों एवं गैर सरकारी निकायों की मदद से यथाशीघ्र किया जाए

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1ण बोराणा रमेश :– "राजस्थान के कला गौरव, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर।

2ण गर्ग बीएल "राजस्थान का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन", प्रकाशकः शिव पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

3ण गर्ग दामोदर लाल :– "अलवर राज्य का इतिहास" अनु प्रकाशन, 958 धामानी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता अलवर।

4ण गोस्वामी डॉ. प्रेमचंद राजस्थान सांस्कृतिक कला एवं साहित्य, – प्रकाशकः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर

5ण राठौड़ विक्रम सिंहः– "राजस्थान की सांस्कृतिक इतिहास", राजस्थानी साहित्य संस्थान, जयपुर।

6ण राजस्थान पर्यटन नीति, पर्यटन कला संस्कृति विभाग, जयपुर।

7ण राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित ब्रोशर्स।

8ण सक्सेना शालिनीः– राजस्थान के लोक तीर्थ" श्याम प्रकाशन जयपुर